

नमो नमो निम्मलदंसणस्स
पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

On Line – आगममंजूषा
दसवेयालिय-निज्जुत्ति

* संकलन एवं प्रस्तुतकर्ता *
मुनि दीपरत्नसागर [M.Com., M.Ed., Ph.D.]

॥ किञ्चित् प्रास्ताविकम् ॥

ये आगम-मंजूषा का संपादन आजसे ७० वर्ष पूर्व अर्थात् वीर संवत् २४६८, विक्रम संवत्-१९९८, ई.स.1942 के दौरान हुआ था, जिनका संपादन पूज्य आगमोद्धारक आचार्यश्री [आनंदसागरसूरिजी](#) म.सा.ने किया था। आज तक उन्ही के प्रस्थापित-मार्ग की रोशनी में सब अपनी-अपनी दिशाएँ ढूँढते आगे बढ़ रहे हैं।

हम ७० साल के बाद आज ई.स.-2012, विक्रम संवत्-२०६८, वीर संवत्-२५३८ में वो ही आगम-मंजूषा को कुछ उपयोगी परिवर्तनों के साथ इंटरनेट के माध्यम से सर्वथा सर्वप्रथम “**OnLine-आगममंजूषा**” नाम से प्रस्तुत कर रहे हैं।

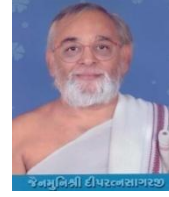
* मूल आगम-मंजूषा के संपादन की किञ्चित् भिन्नता का स्वीकार *

- [१] आवश्यक सूत्र-(आगम-४०) में केवल मूल सूत्र नहीं है, मूल सूत्रों के साथ निर्युक्ति भी सामिल की गई है।
[२] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) में भी केवल मूल सूत्र नहीं है, मूलसूत्रों के साथ भाष्य भी सामिल किया है।
[३] जीतकल्प सूत्र-(आगम-३८) का वैकल्पिक सूत्र जो “पंचकल्प” है, उनके भाष्य को यहाँ सामिल किया गया है।

[४] “ओघनिर्युक्ति”-(आगम-४१) के वैकल्पिक आगम “पिंडनिर्युक्ति” को यहाँ समाविष्ट तो किया है, लेकिन उनका मुद्रण-स्थान बदल गया है।

[५] “कल्प(बारसा)सूत्र” को भी मूल आगममंजूषा में सामिल किया गया है।

-मुनि दीपरत्नसागर

: Address:- Mnui Deepratnasagar, MangalDeep society, Opp.DholeswarMandir, POST:- THANGADH Dist.surendranagar. Mobile:-9825967397 jainmunideepratnasagar@gmail.com	मुनि दीपरत्नसागर  <small>जैनमुनिश्री दीपरत्नसागर</small>
---	--

श्रीदशवैकालिकनियुक्तिः—सिद्धिगइमुवगयाणं कम्मविसुद्धाणं सव्वसिद्धाणं । नमिऊणं दसयालियनिज्जुत्तिं कित्तइस्सामि ॥ १ ॥ आईमज्झवसाणे काउं मंगलपरिग्गहं विहिणा । नामाइमंगलंपिअ चउव्विहं पन्नवेऊणं ॥ २ ॥ सुअनाणे अणुओएणऽहिगयं सो चउव्विहो होइ । चरणकरणाणुओए धम्म गणिए य दविए य ॥ ३ ॥ अपुहुत्तपुहुत्ताइं निदिसिउं इत्थ होइ अहिगारा । चरणकरणाणुओगेण तस्स दारा इमे हुंति ॥ ४ ॥ निक्खेवे १ गट्ट २ निरुत्ति ३ विही ४ पवित्ती ५ य केण वा ६ ? कस्स ७ ? । तदारऽभेय ९ लक्खण १० तदरिहपरिसा ११ य सुत्तथो १२ ॥ ५ ॥ एयाइं परूवेउं कप्पे वण्णियगुणेण गुरुणा उ । अणुओगो दस-वेयालियस्स विहिणा कहेयव्वो ॥ ६ ॥ दसकालियंति नामं संखाए कालओ य निद्वेसो । दसकालियसुअखंधं अज्झयणुद्वेस निक्खिविउं ॥ ७ ॥ नामं ठवणा दविए माउयपयसंगहिक्कए चेव । पज्जव भावे य तहा सत्तेए इक्कगा होंति ॥ ८ ॥ नामं ठवणा दविए खित्ते काले तहेव भावे अ । एसो खलु निक्खेवो दसगस्स य छव्विहो होइ ॥ ९ ॥ बाला किद्धा मंदा बला य पंना य हायणि पवंचा । पब्भारमुम्मूही साइणी य दसमी य काल-दसा ॥ १० ॥ दव्वे अद्ध अहाउअ उवक्कमे देसकालकाले अ । तह य पमाणे वंने भावे पगयं तु भावेण ॥ ११ ॥ सामाइयऽणुक्कमओ वंनेउं विगयपोरिसीए ऊ । निज्जूढं किल सिज्जंभवेण दसकालियं तेणं ॥ १२ ॥ जेण व जं व पडुच्चा जत्तो जावंति जह य ते ठविया । सो तं च तओ ताणि य तहा य कमसो कहेयव्वं ॥ १३ ॥ सेज्जंभवं गणधरं जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं । मणगपियरं दसकालियस्स निज्जूहगं वंदे ॥ १४ ॥ मणगं पडुच्च सेज्जंभवेण निज्जूहिया दसऽज्झयणा । वेयालियाइ ठविया तम्हा दसकालियं णामं ॥ १५ ॥ आयप्पवायपुव्वा निज्जूढा होइ धम्मपन्नत्ती । कम्मप्पवायपुव्वा पिंडस्स उ एसणा तिविहा ॥ १६ ॥ सच्चप्पवायपुव्वा निज्जूढा होइ वक्कसुद्धी उ । अवसेसा निज्जूढा नवमस्स उ तइयवत्थूओ ॥ १७ ॥ बीओऽविअ आएसो गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ । एअं किर णिज्जूढं मणगस्स अणुग्गहट्टाए ॥ १८ ॥ दुमपुप्फियाइया खलु दस अज्झयणा सभिकखुयं जाव । अहिगारेऽवि य एत्तो वोच्छं पत्तेयमेक्केक्के ॥ १९ ॥ पढमे धम्मपसंसा सो य इहेव जिणसासणम्मित्ति । बिइए धिईए सक्का काउं जे एस धम्मोत्ति ॥ २० ॥ तइए आयारकहा खुड्डिया आयसंजमोवाओ । तह जीवसंजमोऽविय होइ चउत्थंमि अज्झयणे ॥ २१ ॥ भिक्खविसोही तवसंजमस्स गुणकारिया उ पंचमए । छट्टे आयारकहा महई जोग्गा महयणस्स ॥ २२ ॥ वयणविभत्ती पुण सत्तमम्मि पणिहाणमट्टमे भणियं । णवमे विणओ दसमे समाणियं एस भिक्खुत्ति ॥ २३ ॥ दो अज्झयणा चूलिय विसीययंते थिरीकरणमेगं । बिइए विवित्तचरिया असीयणगुणाइरेगफला ॥ २४ ॥ दसकालिअस्स एसो पिंडत्थो वण्णिओ समासेणं । एत्तो एक्केक्कं पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि ॥ २५ ॥ पढमज्झयणं दुमपुप्फियंति चत्तारि तस्स दाराइं । वण्णेउवक्कमाई धम्मपसंसाइ अहिगारो ॥ २६ ॥ ओहो जं सामन्नं सुआभिहाणं चउव्विहं तं च । अज्झयणं अज्झीणं आय ज्झवणा य पत्तेअं ॥ २७ ॥ नामाइचउव्वेयं वण्णेऊणं सुआणुसारेणं । दुमपुप्फिअ आओज्जा चउसुं पि कमेण भावेसुं ॥ २८ ॥ अज्झ-प्पस्साणयणं कम्माणं अवचओ उवचिआणं । अणुवचओ अ नवाणं तम्हा अज्झयणमिच्छंति ॥ २९ ॥ अहिगम्मंति व अत्था इमेण अहिगं च नयणमिच्छंति । अहिगं च साहु गच्छइ तम्हा अज्झयणमि-च्छंति ॥ ३० ॥ जह दीवा दीवसयं पइप्पई सो अ दिप्पई दीवो । दीवसमा आयरिया दिप्पंति परं च दीवंति ॥ ३१ ॥ नाणस्स दंसणस्सऽवि चरणस्स य जेण आगमो होई । सो होइ भावआओ आओ लाहोत्ति निद्विट्ठो ॥ ३२ ॥ अट्टविहं कम्मरयं पोराणं जं खवेइ जोगेहिं । एयं भावज्झवणं नेअव्वं आणुपुव्वीए ॥ ३३ ॥ णामदुमो ठवणदुमो दव्वदुमो चेव होइ भावदुमो । एमेव य पुप्फस्सवि चउव्विहो होइ निक्खेवो ॥ ३४ ॥ दुमा य पायवा रुक्खा, अगमा विडिमा तरू । कुहा महीरुहा वच्छा, रोवगा रुंजगावि अ ॥ ३५ ॥ पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि । सुमणाणि अ सुहुमाणि अ पुप्फाणं होंति एगट्टा ॥ ३६ ॥ दुमपुप्फिआ य आहारएसणा गोअरे तथा उंछे । मेस जलूगा सप्पे वणऽक्खइसुगोलपुत्तुदए ॥ ३७ ॥ कत्थइ पुच्छइ सीसो कहिंचऽपुट्टा कंहंति आयरिया । सीसाणं तु हियट्टा विपुलतरागं तु पुच्छाए ॥ ३८ ॥ णामंठवणाधम्मो दव्वधम्मो अ भावधम्मो अ । एएसिं नाणत्तं वुच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥ ३९ ॥ दव्वं च अत्थिकायप्पयारधम्मो अ भावधम्मो अ । दव्वस्स पज्जवा जे ते धम्मा तस्स दव्वस्स ॥ ४० ॥ धम्मत्थिकायधम्मो पयारधम्मो य विसयधम्मो य । लोइयकुप्पावयणिअलोगुत्तर लोणऽणेगविहो ॥ ४१ ॥ गम्मपसुदेसरजे पुरवरगामगणगोट्टिराईणं । सावज्जो उ कुत्तिथियधम्मो न जिणेहिं उ पसत्थो ॥ ४२ ॥ दुविहो लोणुत्तरिओ सुअधम्मो खलु चरित्तधम्मो अ । सुअधम्मो सज्जाओ चरित्तधम्मो समणधम्मो ॥ ४३ ॥ दव्वे भावेऽवि अ मंगलाइं दव्वंमि पुण्णकलसाई । धम्मो उ भावमंगलमेत्तो

सिद्धितिकाऊणं ॥ ४४ ॥ हिंसाए पडिवक्खो होइ अहिंसा चउव्विहा सा उ । दव्वे भावे अ तथा अहिंसज्जीवाइवाओत्ति ॥ ४५ ॥ पुढविदगअगणिमारुयवणस्सईबितिचउपणिंदिअज्जीवे । पेहोपेह पमज्जणप-
रिट्टवणमणोवईकाए ॥ ४६ ॥ अणसणमूणोअरिआ वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ । कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ ॥ ४७ ॥ पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ । ज्ञाणं उस्सग्गोऽविअ अन्धि-
तरओ तवो होइ ॥ ४८ ॥ जिणवयणं सिद्धं चैव भण्णए कत्थई उदाहरणं । आसज्ज उ सोयारं हेऊऽवि कहिंचि भण्णेज्जा ॥ ४९ ॥ कत्थइ पंचावयवं दसहा वा सव्वहा न पडिसिद्धं । न य पुण सव्वं भण्णइ
हंदी सवियारमक्खायं ॥ ५० ॥ तत्थाहरणं दुविहं चउव्विहं होइ एकमेकं तु । हेऊ चउव्विहो खलु तेण उ साहिज्जए अत्थो ॥ ५१ ॥ नायमुदाहरणंतिय दिट्ठंतोवम निदरिसणं तह य । एगट्ठं तं दुविहं चउव्विहं चैव
नायव्वं ॥ ५२ ॥ चरिअं च कप्पिअं वा दुविहं तत्तो चउव्विहेक्केकं । आहरणे तद्देसे तद्दोसे चैवुवन्नासे ॥ ५३ ॥ चउहा खलु आहरणं होइ अवाओ उवाय ठवणा य । तहय पडुपन्नविणासमेव पढमं चउविगप्पं
॥ ५४ ॥ दव्वावाए दोन्नि उ वाणिअगा भायरो धणनिमित्तं । वहपरिणएकमेकं दहंमि मच्छेण निव्वेओ ॥ ५५ ॥ खेत्तंमि अवक्कमणं दसारवग्गस्स होइ अवरें । दीवायणो अ काले भावे मंडुक्किआखवओ
॥ ५६ ॥ सिक्खगअसिक्खगाणं संवेगथिरट्टयाइ दोण्हंपि । दव्वाइया एवं दंसिज्जंते अवाया उ ॥ ५७ ॥ दविअं कारणगहिअं विगिंचिअव्वमसिवाइखेत्तं च । बारसहिं एस्सकालो कोहाइविवेग भावम्मि ॥ ५८ ॥
दव्वादिएहिं निच्चो एगंतेणेव जेसिं अप्पा उ । होइ अभावो तेसिं सुहदुक्खसंसारमोक्खाणं ॥ ५९ ॥ सुहदुक्खसंपओगो न विज्जई निच्चवायपक्खंमि । एगंतुच्छेअंमि अ सुहदुक्खविगप्पणमज्जुत्तं ॥ ६० ॥ एमेव
चउविगप्पो होइ उवाओऽवि तत्थ दव्वंमि । धातुव्वाओ पढमो नंगलकुलिएहिं खेत्तं तु ॥ ६१ ॥ कालो अ नालियाइहिं होइ भावंमि पंडिओ अभओ । चोरनिमित्तं नट्टिअ (चोरस्स कए नट्टिं) वडुकुमारिं
परिकहेइ ॥ ६२ ॥ एवं तु इहं आया पच्चक्खं अणुवल्लभमाणोऽवि । सुहदुक्खमाइएहिं गिज्झइ हेऊहिं अत्थित्ति ॥ ६३ ॥ जह वऽस्साओ हत्थिं गामा नगरं तु पाउसा सरयं । ओदइयाउ उवसमं संकंती देवद-
त्तस्स ॥ ६४ ॥ एवं सउ जीवस्सवि दव्वाइसंकमं पडुच्चा उ । अत्थित्तं साहिज्जइ पच्चक्खेणं परोक्खंपि ॥ ६५ ॥ एवं सउ जीवस्सवि दव्वाइसंकमं पडुच्चा उ । परिणामो साहिज्जइ पच्चक्खेणं परोक्खेत्ति ॥ ६६ ॥ ठव-
णाकम्मं एकं दिट्ठंतो तत्थ पुंडरीयं तु । अहवाऽवि सन्नदक्कणहिं गुसिवकयं उदाहरणं ॥ ६७ ॥ सव्वभिचारं हेतुं सहसा वोत्तुं तमेव अच्चेहिं । उववूहइ सप्पसरं सामत्थं चऽप्पणो नाउं ॥ ६८ ॥ होंति पडुपन्नविणास-
णंमि गंधव्विया उदाहरणं । सीसोऽवि कत्थवि जइ अज्झोवज्जिज्ज तो गुरुणा ॥ ६९ ॥ वारेयव्वु उवायेण जइवा वाऊलिओ वदेज्जाहि । सव्वेऽवि नत्थि भावा किं पुण जीवो ? स वोत्तव्वो ॥ ७० ॥ जं भणसि
नत्थि भावा वयणमिणं अत्थि नत्थि ? जइ अत्थि । एव पइन्नाहाणी असओ णु निसेहए को णु ? ॥ ७१ ॥ णो य विवक्खापुव्वो सद्दोऽजीवुब्भवोत्ति न य सावि । जमजीवस्स उ सिद्धो पडिसेहधणीउ तो जीवो
॥ ७२ ॥ आहरणं तद्देसे चउहा अणुसट्ठि तह उवालंभो । पुच्छा निस्सावयणं होइ सुभदाऽणुसट्ठीए ॥ ७३ ॥ साहुक्कारपुरोगं जह सा अणुसासिया पुरजणेणं । वेयावच्चाइसुवि एव जयंतेऽणुवूहेज्जा ॥ ७४ ॥
जेसिंपि अत्थि आया वत्तव्वा तेऽवि अम्हवि स अत्थि । किंतु अकत्ता न भवइ वेययई जेण सुहदुक्खं ॥ ७५ ॥ उवल्लभम्मि मिगावइ नाहियवाइवि एव वत्तव्वो । नत्थित्ति कुविन्नाणं आयाऽभावे सइ अजुत्तं
॥ ७६ ॥ अत्थित्ति जा वियक्का अहवा नत्थित्ति जं कुविन्नाणं । अच्चंताभावे पोग्गलस्स एयं चिअ न जुत्तं ॥ ७७ ॥ पुच्छाइ कोणिओ खलु निस्सावयणंमि गोयमस्सामी । नाहियवाइं पुच्छे जीवत्थित्तं अणि-
च्छंतं ॥ ७८ ॥ केणंति नत्थि आया ? जेण परोक्खोत्ति तव कुविन्नाणं । होइ परोक्खं तम्हा नत्थित्ति निसेहए को णु ? ॥ ७९ ॥ अन्नावएसओ नाहियवाइं जेसिं नत्थि जीवो उ । दाणाइफलं तेसिं न विज्जई
चउह तद्दोसं ॥ ८० ॥ पढमं अहम्मजुत्तं पडिलोमं अत्तणो उवन्नासं । दुरुवणियं तु चउत्थं अहम्मजुत्तंमि नलदामो ॥ ८१ ॥ पडिलोमे जह अभओ पज्जोयं हरइ अवहिओ संतो । गोविंदवायगोऽविय जह पर-
पक्खं नियत्तेइ ॥ ८२ ॥ अत्तउवन्नासंमि य तलागभेयंमि पिंगलो थवई । अणिमिसगिण्हण भिक्खुग दुरु (द्दु) वणीए उदाहरणं ॥ ८३ ॥ चत्तारि उवन्नासे तव्वत्थुग अन्नवत्थुगे चैव । पडिणिभए हेउम्मि य
होंति इणमो उदाहरणा ॥ ८४ ॥ तव्वत्थुयंमि पुरिसो सव्वं भमिऊण साहइ अपुव्वं । तयअन्नवत्थुगंमिवि अन्नत्ते होइ एगत्तं ॥ ८५ ॥ तुज्झ पिया मह पिउणो धारेइ अणूणयं सयसहस्सं (पडिनिभंमि) । किं
नु जवा किज्जंते ? जेण मुहाए न लब्भंति ॥ ८६ ॥ अहवावि इमो हेऊ विन्नेओ तत्थिमो चउविअप्पो । जावग थावग वंसग लूसग हेऊ चउत्थो उ ॥ ८७ ॥ उब्भामिगा अ महिला जावगहेउंमि उंटलिंडाइं ।
लोगस्स मज्झजाणण थावगहेऊ उदाहरणं ॥ ८८ ॥ सा सगडतित्तिरी वंसगंमि हेउम्मि होइ नायव्वा । तउसग वंसग लूसगहेउम्मि य मोयओ य पुणो ॥ ८९ ॥ धम्मो गुणा अहिंसाइया उ ते परममंगल पइन्ना ।
देवावि लोगपुज्जा पणमंति सुधम्ममिइ हेऊ ॥ ९० ॥ दिट्ठंतो अरहंता अणगारा य बहवो उ जिणसीसा । वत्तणुवत्ते नज्जइ जं नरवइणोऽवि पणमंति ॥ ९१ ॥ उवसंहारो देवा जह तह रायावि पणमइ सुधम्मं ।
तम्हा धम्मो मंगलमुक्किट्टमिइ निगमणं च ॥ ९२ ॥ बिइपइन्ना जिणसासणंमि साहंति साहवो धम्मं । हेऊ जम्हा सव्भाविएसुऽहिंसाइसु जयंति ॥ ९३ ॥ जह जिणसासणनिरया धम्मं पालेंति साहवो सुद्धं । न
कुत्तिथिएसु एवं दीसइ परिवालणोवाओ ॥ ९४ ॥ तेसुवि य धम्मसद्दो धम्मं निययं च ते पसंसंति । नणु भणिओ सावज्जो कुत्तिथिधम्मो जिणवरेहिं ॥ ९५ ॥ जो तेसु धम्मसद्दो सो उवयारेण निच्छएण इहं ।
जह सीहसइ सीहे पाहणुवयारओऽण्णत्थ ॥ ९६ ॥ एस पइन्नासुद्धी हेऊ अहिंसाइएसु पंचसुवि । सव्भावेण जयंती हेउविसुद्धी इमा तत्थ ॥ १ ॥ जं भत्तपाणउवगरणवसहिसयणासणाइसु जयंति । फासुयअ-
कयअकारियऽणुमयाणुदिट्ठभोई य ॥ २ ॥ अप्फासुयकयकारियअणुमयउदिट्ठभोइणो हंदि । तसथावरहिंसाए जणा अकुसला उ लिप्पंति ॥ ३ ॥ एसा हेउविसुद्धी दिट्ठंतो तस्स चैव य विसुद्धी । इह ते भणिया

उ फुडा सुत्तप्फासे उ इयमन्ना ॥ ४ ॥ (भाष्यम्) जह भमरोत्ति य एत्थं दिट्ठंतो होइ आहरणदेसे । चंदमुहि दारिगेयं सोमत्तऽवहारण ण सेसं ॥ ९७ ॥ एवं भमराहरणे अणिययवित्तित्तणं न सेसाणं । गहणं दिट्ठंतविसुद्धि सुत्तभणिया इमा वऽन्ना ॥ ९८ ॥ एत्थ य भणिज्ज कोई संमणाणं कीरए सुविहियाणं । पागोवजीविणोत्ति य लिप्पंतारंभदोसेणं ॥ ९९ ॥ वासइ न तणस्स कए न तणं वडुइ कए मयकुलाणं । न य रुक्खा सयसाला फुल्लन्ति कए महुररणं ॥ १०० ॥ अग्गिम्मि हवी हूयइ आइच्चो तेण पीणिओ संतो । वरिसइ पयाहियाए तेणोसहिओ परोहंति ॥ १०१ ॥ किं दुब्भिक्खं जायइ जइ एवं ? अह भवे दुरिट्ठं तु । किं जायइ सव्वत्था दुब्भिक्खं अह भवे इंदो ? ॥ १०२ ॥ वासइ तो किं विग्घं निग्घायाईहिं जायए तस्स ? । अह वासइ उउसमए न वासई तो तणट्टाए ॥ १०३ ॥ किंच दुमा पुप्फंति भमराणं कारणा अहासमयं । मा भमरमहुरिगणा किलामएजा अणाहारा ॥ १०४ ॥ कस्सइ बुद्धी एसा वित्ती उवकप्पिआ पयावइणा । सत्ताणं तेण दुमा पुप्फंति महुरिगणट्टा ॥ १०५ ॥ तं न भवइ जेण दुमा नामागोयस्स पुव्वविहियस्स । उदएणं पुप्फफलं निवत्तयंति इमं चऽन्नं ॥ १०६ ॥ अत्थि बहु वणखंडा भमरा जत्थ न उवेंति न वसंति । तत्थऽवि पुप्फंति दुमा पगई एसा दुमगणाणं ॥ १०७ ॥ जइ पगई कीस पुणो सव्वं कालं न देंति पुप्फफलं । जं काले पुप्फफलं दयंति ? गुरुराह अत एव ॥ १०८ ॥ पगई एस दुमाणं जं उउसमयस्मि आगए संते । पुप्फंति पायवगणा फलं च कालेण बंधंति ॥ १०९ ॥ किंनु गिही रंधंति समणाणं कारणा अहासमयं । मा समणा भगवंतो किलामएजा अणाहारा ॥ ११० ॥ समणऽणुकंपनिमित्तं पुण्णनिमित्तं च गिहनिवासी उ । कोइ भणिज्जा पागं करेंति सो भण्णइ न जम्हा ॥ १११ ॥ कंतारे दुब्भिक्खे आयंके वा महइ समुप्पन्ने । रत्तिं समणसुविहिया सव्वाहारं न भुंजंति ॥ ११२ ॥ अह कीस पुण गिहत्था रत्तिं आयरतरेण रंधंति । समणेहिं सुविहिएहिं चउव्विहाहारविरएहिं ? ॥ ११३ ॥ अत्थि बहुगामनगरा समणा जत्थ न उवेंति न वसंति । तत्थवि रंधंति गिही पगई एसा गिहत्थाणं ॥ ११४ ॥ पगई एस गिहिणो जं गिहिणो गामनगरनिगमेसुं । रंधंति अप्पणो परियणस्स कालेण अट्टाए ॥ ११५ ॥ तत्थ समणा तवस्सी परकडपरनिट्ठियं विगयधूमं । आहारं एसंती जोगाणं साहणट्टाए ॥ ११६ ॥ नवकोडीपरिसुद्धं उग्गमउप्पायणेसणासुद्धं । छट्टाणरक्खणट्टा अहिंसअणुपालणट्टाए ॥ ११७ ॥ (प्रक्षिप्ता) दिट्ठंतसुद्धि एसा उवसंहारो य सुत्तनिट्ठिट्ठो । संती विजंतित्ति य संतिं सिद्धिं च(व)साहेंति ॥ ११७ ॥ धारेइ तं तु दव्वं तं दव्वविहंगमं वियाणाहि । भावे विहंगमो पुण गुणसन्नासिद्धिओ दुविहो ॥ ११८ ॥ विहमागासं भण्णइ गुणसिद्धी तप्पइट्ठिओ लोगो । तेण उ विहंगमो सो भावत्थो वा गई दुविहा ॥ ११९ ॥ भावगई कम्मगई भावगई पप्प अत्थिकाया उ । सव्वे विहंगमा खलु कम्मगईए इमे भेया ॥ १२० ॥ विहगगई चलणगई कम्मगई उ समासओ दुविहा । तदुदयवेययजीवा विहंगमा पप्प विहगगई ॥ १२१ ॥ चलणं कम्मगई खलु पडुच्च संसारिणो भवे जीवा । पोग्गलदव्वाइं वा विहंगमा एस गुणसिद्धी ॥ १२२ ॥ सन्नासिद्धिं पप्पा विहंगमा होंति पक्खिणो सव्वे । इहइं पुण अहिगारो विहासगमणेहिं भमरेहिं ॥ १२३ ॥ दाणेत्ति दत्तगिण्हण भत्ते भज सेव फासुगेण्हणया । एसणतिगंमि निरया उवसंहारस्स सुद्धि इमा ॥ १२४ ॥ अवि भमरमहुरिगणा अविदिन्नं आवियंति कुसुमरसं । समणा पुण भगवन्तो नादिन्नं भोत्तुमिच्छंति ॥ १२५ ॥ अस्संजएहिं भमरेहिं जइ समा संजया खलु भवंति । एयं उवमं किच्चा नूणं अस्संजया समणा ॥ १२६ ॥ उवमा खलु एस कया पुव्वुत्ता देसलक्खणोवणया । अणिययवित्तिनिमित्तं अहिंसअणुपालणट्टाए ॥ १२७ ॥ जह दुमगणा उ तह नगरजणवया पयणपायणसहावा । जह भमरा तह मुणिणो नवरि अदत्तं न भुंजंति ॥ १२८ ॥ कुसुमे सहावफुल्ले आहारंति भमरा जह तहा उ । भत्तं सहावसिद्धं समणसुविहिया गवेसंति ॥ १२९ ॥ उवसंहारो भमरा जह तह समणावि अवहजीवित्ति । दंतत्ति पुण पयंमि नायव्वं वक्कसेसमिणं ॥ १३० ॥ जह इत्थ चेव इरियाइएसु सव्वंमि दिक्खियपयारे । तसथावरभूयहियं जयंति सव्वभावियं साहू ॥ १३१ ॥ उवसंहारविसुद्धी एस समत्ता उ निगमणं तेणं । वुच्चंति साहुणोत्ति य जेणं ते महुरसमाणा ॥ १३२ ॥ तम्हा दयाइगुणसुट्टिएहिं भमरोव्व अवहवित्तीहिं । साहूहिं साहिउत्ति य उक्किट्ठं मंगलं धम्मो ॥ १३३ ॥ निगमणसुद्धी तित्थंतरावि धम्मत्थमुज्जया विहरे । भण्णइ कायाणं ते जयणं न मुणंति न करेंति ॥ १३४ ॥ न यं उग्गमाइसुद्धं भुंजंति महुररा वऽणुवरोहिं । नेव य तिगुत्तिगुत्ता जह साहू निच्चकालंपि ॥ १३५ ॥ कायं वायं च मणं च इंदियाइं च पंच दमयंति । धारेंति बंभचेरं संजमयंती कसाए य ॥ १३६ ॥ जं च तवे उज्जुत्ता तेणेसिं साहुलक्खणं पुण्णं । तो साहुणोत्ति भण्णति साहवो निगमणं चेयं ॥ १३७ ॥ ते उ पइन्न विभत्ती हेउ विभत्ती विवक्ख पडिसेहो । दिट्ठंतो आसंका तप्पडिसेहो निगमणं च ॥ १३८ ॥ धम्मो मंगलमुक्किट्ठंति पइन्ना अत्तवयणनिहेसो । सो य इहेव जिणमये नऽन्नत्थ पइन्नपविभत्ती ॥ १३९ ॥ सुरपूइओत्ति हेऊ धम्मट्टाणे ठिया उ जं परमे । हेउविभत्ती निरुवहि जियाण अवहेण य जयंति ॥ १४० ॥ जिणवयणपदुट्टेऽवि हु ससुराईए अधम्मरुइणोऽवि । मंगलबुद्धीइ जणो पणमइ आईदुयविवक्खो ॥ १४१ ॥ बिइयदुयस्स विवक्खो सुरेहिं पुजंति जण्णजाईवि । बुद्धाईवि सुरणया वुच्चन्ते णायपडिवक्खो ॥ १४२ ॥ एवं तु अवयवाणं चउण्ह पडिवक्खु पंचमोऽवयवो । एत्तो छट्टोऽवयवो विवक्खपडिसेह तं वोच्छं ॥ १४३ ॥ सायं संमत्त पुमं हासं रइ आउनामगोअसुहं । धम्मफलं आइदुगे विवक्खपडिसेह मो एसो ॥ १४४ ॥ अजिइंदिय सोवहिया वहगा जइ तेऽवि नाम पुजंति । अग्गीवि होज्ज सीओ हेउविभत्तीण पडिसेहो ॥ १४५ ॥ बुद्धाई उवयारे पूयाठाणं जिणा उ सव्वभावं । दिट्ठंते पडिसेहो छट्टो एसो अवयवो उ ॥ १४६ ॥ अरिहंतमग्गामी दिट्ठंतो साहुणोऽवि समचित्ता । पागरएसु गिहीसु एसंते अवहमाणा उ ॥ १४७ ॥ तत्थ भवे आसंका उहिस्स जइवि कीरए पागो । तेण व विसमं नायं वासतणा तस्स पडिसेहे ॥ १४८ ॥ तम्हा उ सुरनराणं पुज्जत्ता मंगलं सया धम्मो । दसमो एस अवयवो पइन्नहेऊ पुणोवयणं ॥ १४९ ॥ णायंमि गिण्हियव्वे अगिण्हियव्वंमि चेव अत्थंमि । जइयव्वमेव इइ जो उवएसो सो नओ नामं ॥ १५० ॥

सव्वेसिंपि नयाणं बहुविहवत्तव्वयं निसामेत्ता । तं सव्वनयविसुद्धं जं चरणगुणट्टिओ साहू ॥ १५१ ॥ दुमपुप्फियनिज्जुत्ती समासओ वण्णिया विभासाए । जिणचउदसपुव्वी वित्थरेण कहयंति से अट्टं ॥ १५२ ॥
 दुमपुप्फियनिज्जुत्ती संमत्ता १ ॥ सामन्नपुव्वगस्स उ निक्खेवो होइ नामनिप्फण्णे । सामणस्स चउक्को तेरसगो पुव्वयस्स भवे ॥ १५३ ॥ समणस्स उ निक्खेवो चउक्को होइ आणुपुव्वीए । दव्वे सरी-
 रभविओ भावेण उ संजओ समणो ॥ १५४ ॥ जह मम न पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं । न हणइ न हणावेइ य समणई तेण सो समणो ॥ १५५ ॥ नत्थि य सि कोइ वेसो पियो व सव्वेसु चव
 जीवेसु । एएण होइ समणो एसो अन्नोऽवि पजाओ ॥ १५६ ॥ तो समणो जइ सुमणो भावेण य जइ न होइ पावमणो । सयणे य जणे य समो समो य माणावमाणेसु ॥ १५७ ॥ उरगगिरिजलणसागरनह-
 यलतरुणसमो य जो होइ । भमरमिगधरणिजलरुहरविपवणसमो जओ समणो ॥ १५८ ॥ विसतिणिसवायवंजुलकणियारुप्पलसमेण समणेणं । भमरुंदुरुनडकुक्कुडअद्दागसमेण होयव्वं ॥ १ ॥ (प्रक्षिप्ता)
 पव्वइए अणगारे पासंडे चरग तावसे भिक्खू । परिवाइए य समणे निग्गंथे संजए मुत्ते ॥ १५९ ॥ तिन्ने ताई दविए मुणी य खंते य दन्त विरए य । लूहे तीरट्टेऽविय हवंति समणस्स नामाइं ॥ १६० ॥ णामं
 ठवणा दविए खेत्ते काल दिसि तावखेत्ते य । पन्नवग पुव्व वत्थू पाहुड अइपाहुडे भावे ॥ १६१ ॥ नामंठवणाकामा दव्वकामा य भावकामा य । एसो खलु कामाणं निक्खेवो चउविहो होइ ॥ १६२ ॥ सदरस-
 रूवगंधा फासा उदयंकरा य जे दव्वा । दुविहा य भावकामा इच्छाकामा मयणकामा ॥ १६३ ॥ इच्छा पसत्थअपसत्थिगा य मयणंमि वेयउवओगो । तेहऽहिगारो तस्स उ वयंति धीरा निरुत्तमिणं ॥ १६४ ॥
 विसयसुहेसु पसत्तं अबुहजणं कामरागपडिबद्धं । उक्कामयंति जीवं धम्माओ तेण ते कामा ॥ १६५ ॥ अन्नंपिय से नामं कामा रोगत्ति पंडिया बिंति । कामे पत्थेमाणो रोगे पत्थेइ खलु जंतू ॥ १६६ ॥ णामपयं
 ठवणपयं दव्वपयं चव होइ भावपयं । एक्केकंपिय एत्तो णेगविहं होइ नायव्वं ॥ १६७ ॥ आउट्टिमउक्किन्नं उण्णेजं पीलिमं च रंगं च । गंथिमवेढिमपूरिमवाइमसंघाइमच्छेजे ॥ १६८ ॥ भावपयंपि य दुविहं
 अवरहपयं च नो य अवरहं । नोअवरहं दुविहं माउग नोमाउगं चव ॥ १६९ ॥ नोमाउगंपि दुविहं गहियं च पइन्नयं च बोद्धव्वं । गहियं चउप्पयारं पइन्नगं होइ णेगविहं ॥ १७० ॥ गज्जं पज्जं गेयं चुण्णं च
 चउव्विहं तु गहियपयं । तिसमुट्टाणं सव्वं इइ बेंति सलक्खणा कइणो ॥ १७१ ॥ महुरं हेउनिजुत्तं गहियमपायं विरामसंजुत्तं । अपरिमियं चऽवसाणे कव्वं गज्जंति नायव्वं ॥ १७२ ॥ पज्जं तु होइ तिविहं सम-
 मद्धसमं च नाम विसमं च । पायेहिं अक्खरेहिं य एव विहिण्णू कई बेंति ॥ १७३ ॥ तंतिसमं तालसमं वण्णसमं गहसमं लयसमं च । कव्वं तु होइ गेयं पंचविहं गीयसन्नाए ॥ १७४ ॥ अत्थबहुलं महत्थं
 हेउनिवाओवसग्गंभीरं । बहुपायमवोच्छिन्नं गमणयसुद्धं च चुण्णपयं ॥ १७५ ॥ इंदियविसयकसाया परीसहा वेयणा य उवसग्गा । एए अवरहपया जत्थ विसीयंति दुस्मेहा ॥ १७६ ॥ अट्टारस उ सहस्सा
 सीलंगाणं जिणेहिं पन्नत्ता । तेसिं पडिरक्खणट्टा अवरहपए उ वजेज्जा ॥ १७७ ॥ जोए करणे सन्ना इदिय भोमाइ समणधम्मे य । सीलंगसहस्साणं अट्टारसगस्स निप्फत्ती ॥ १७८ ॥ सामणपुव्वयनिज्जुत्ती
 समत्ता २ ॥ नामंठवणादविए खेत्ते काले पहाण पइ भावे । एएसि महंताणं पडिवक्खे खुइया होंति ॥ १७९ ॥ पइखुइएण पगयं आयारस्स उ चउक्कनिक्खेवो । नामं ठवणा दविए भावायारे य बोद्धव्वे ॥ १८० ॥
 नामणधावणवासणसिक्खावणसुकरणाविरोहीणि । दव्वाणि जाणि लोए दव्वायारं वियाणाहि ॥ १८१ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवआयारे य वीरियायारे । एसो भावायारो पंचविहो होइ नायव्वो ॥ १८२ ॥ निस्सं-
 किय निक्कंखिय निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ । उववूह थिरीकरणे वच्छल्ल पभावणे अट्ट ॥ १८३ ॥ अइसेसइड्डियायरियवाइधम्मकहीखमगनेमित्ती । विज्जारायागणसंमया य तित्थं पभावंति ॥ १८४ ॥ काले
 विणये बहुमाणे उवहाणे तह य अनिण्हवणे । वंजणअत्थतदुभए अट्टविहो नाणमायारो ॥ १८५ ॥ पणिहाणजोगजुत्तो पंचहिं समिईहिं तिहि य गुत्तीहिं । एस चरित्तायारो अट्टविहो होइ नायव्वो ॥ १८६ ॥
 बारसविहम्मि वि तवे सन्भितरबाहिरे कुसलदिट्ठे । अगिलाइ अणाजीवी नायव्वो सो तवायारो ॥ १८७ ॥ अणिगूहियबलविरिओ परक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो । जुंजइ अ जहाथामं नायव्वो वीरियायारो ॥ १८८ ॥
 अत्थकहा कामकहा धम्मकहा चव मीसिया य कहा । एत्तो एक्केकावि य णेगविहा होइ नायव्वो ॥ १८९ ॥ विज्जा सिप्पमुवाओ अणिवेओ संचओ अ दक्खत्तं । सामं दंडो भेओ उवप्पयाणं च अत्थकहा ॥ १९० ॥
 सत्थाहसुओ दक्खत्तणेण सेट्ठीसुओ य रूवेणं । बुद्धीए अमच्चसुओ जीवइ पुन्नेहिं रायसुओ ॥ १९१ ॥ दक्खत्तणयं पुरिसस्स पंचगं सइगमाहु सुंदेरं । बुद्धी पुण साहस्सा सयसाहस्साइं पुन्नाइं ॥ १९२ ॥ रूवं
 वओ य वेसो दक्खत्तं सिक्खियं च विसएसुं । दिट्ठं सुयमणुभूयं च संथवो चव कामकहा ॥ १९३ ॥ धम्मकहा बोद्धव्वा चउव्विहा धीरपुरिसपन्नत्ता । अक्खेवणि विक्खेवणि संवेगे चव निव्वेए ॥ १९४ ॥ आयारे
 ववहारे पन्नत्ती चव दिट्ठीवाए अ । एसा चउव्विहा खलु कहा उ अक्खेवणी होइ ॥ १९५ ॥ विज्जा चरणं च तवो पुरिसक्कारो य समिइगुत्तीओ । उवइस्सइ खलु जहियं कहाइ अक्खेवणीइ रसो ॥ १९६ ॥ कहि-
 ऊण ससमयं तो कहेइ परसमयमह विवचासा । मिच्छासम्मावाए एमेव हवंति दो भेया ॥ १९७ ॥ जा ससमयवज्जा खलु होइ कहा लोगवेयसंजुत्ता । परसमयाणं च कहा एसा विक्खेवणी नाम ॥ १९८ ॥ जा
 ससमयेण पुव्विं अक्खायो तं लुभेज्ज परसमए । परसासणवक्खेवा परस्स समयं परिकहेइ ॥ १९९ ॥ आयपरसरीरगया इहलोए चव तहय परलोए । एसा चउव्विहा खलु कहा उ संवेयणी होइ ॥ २०० ॥ वीरिय-
 विउव्वणिट्ठी नाणचरणदंसणाण तह इट्ठी । उवइस्सइ खलु जहियं कहाइ संवेयणीइ रसो ॥ २०१ ॥ पावाणं कम्माणं असुभविवागो कहिज्जए जत्थ । इह य परत्थ य लोए कहा उ णिव्वेयणी नाम ॥ २०२ ॥
 थोवंपि पमायकयं कम्मं साहिज्जई जहिं नियमा । पउरासुहपरिणामं कहाइ निव्वेयणीइ रसो ॥ २०३ ॥ सिद्धी य देवलोगो सुकुलुप्पत्ती य होइ संवेगो । नरगो तिरिक्खजोणी कुमाणुसत्तं च निव्वेओ ॥ २०४ ॥

वेणइयस्स पढमया कहा उ अक्खेवणी क्कहेयव्वा । तो ससमयगहियत्थे कहिज्ज विक्खेवणी पच्छा ॥२०५॥ अक्खेवणिअक्खित्ता जे जीवा ते लभन्ति संमत्तं । विक्खेवणीएँ भज्जं गाढतरागं च मिच्छत्तं ॥२०६॥
 धम्मो अत्थो कामो उवइस्सइ जत्थ सुत्तकव्वेसुं । लोगे वेये समए सा उ कहा मीसिया णाम ॥ २०७ ॥ इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा चोरजणवयकहा य । नडनट्टजल्लमुट्टियकहा उ एसा भवे विकहा ॥२०८॥
 एया चेव कहाओ पन्नवगपरूवगं समासज्ज । अकहा कहा य विकहा हविज्ज पुरिसंतरं पप्प ॥ २०९ ॥ मिच्छत्तं वेयन्तो जं अन्नाणी कहं परिकहेइ । लिंगत्थो व गिही वा सा अकहा देसिया समए ॥ २१० ॥
 तवसंजमगुणधारी जं चरणरया कहंति सब्भावं । सव्वजगजीवहियं सा उ कहा देसिया समए ॥ २११ ॥ जो संजओ पमत्तो रागदोसवसगओ परिकहेइ । सा उ विकहा पवयणे पण्णत्ता धीरपुरिसेहिं ॥ २१२ ॥
 सिंगाररसुत्तइया मोहकुवियकुंफुगा सहासिंति । जं सुणमाणस्स कहं समणेण ण सा कहेयव्वा ॥ २१३ ॥ समणेण कहेयव्वा तवनियमकहा विरागसंजुत्ता । जं सोऊण मणुस्सो वच्चइ संवेगनिव्वेयं ॥ २१४ ॥
 अत्थमहंतीवि क्कहा अपरिकिलेसबहुला कहेयव्वा । हंदि महया चडगरत्तणेण अत्थं कहा हणइ ॥२१५॥ खेत्तं कालं पुरिसं सामत्थं चऽप्पणो वियाणेत्ता । समणेण उ अणवज्जा पगयंमि कहा कहेयव्वा ॥२१६॥
 तइयज्झयणनिज्जुत्ती संमत्ता ३ ॥ जीवाहारो भण्णइ आयारो तेणिमं तु आयायं । छज्जीवणियज्झयणं तस्सऽहिगारा इमे होंति ॥ ५ ॥ (भाष्यम्) जीवाजीवाहिगमो चरित्तधम्मो तहेव जयणा य । उवएसो
 धम्मफलं छज्जीवणियाइ अहिगारा ॥ २१७ ॥ छज्जीवणियाए खलु निक्खेवो होइ नामनिप्फन्ने । एएसिं तिण्हंपि उ पत्तेय परूवणं वोच्छं ॥ २१८ ॥ णामं ठवणा दविए माउगपय संगहेक्कए चेव । पज्जव भावे य
 तहा सत्तेए एक्कगा होंति ॥२१९॥ नामं ठवणा दविए खेत्ते काले तहेव भावे अ । एसो उ छक्कगस्सा निक्खेवो छव्विहो होइ ॥२२०॥ जीवस्स उ निक्खेवो परूवणा लक्खणं च अत्थित्तं । अन्नामुत्तत्तं निच्च
 कारगो देहवावित्तं ॥ २२१ ॥ गुणि उडुगइत्ते या निम्मय साफल्लता य परिमाणे । जीवस्स तिविह कालम्मि परिक्खा होइ कायव्वा ॥२२२॥ दो दारगाहाओ ॥ नामंठवणाजीवो दव्वजीवो य भावजीवो य ॥
 ओह भवग्गहणम्मि य तब्भवजीवे य भावम्मि ॥ २२३ ॥ नामंठवण गयाओ दव्वे गुणपज्जवेहिं रहिउत्ति । तिविहो य होइ भावे ओहे भव तब्भवे चेव ॥ ६ ॥ संते आउयकम्मे धरई तस्सेव जीवई उदए ।
 तस्सेव निज्जराए मओत्ति सिद्धो नयमएणं ॥ ७ ॥ जेण य धरइ भवगओ जीवो जेण य भवाउ संकमई । जाणाहि तं भवाउं चउव्विहं तब्भवे दुविहं ॥ ८ ॥ निक्खेवोत्ति गयं ॥ दुविहा य हुंति जीवा सुहुमा
 तह बायरा य लोगम्मि । सुहुमा य सव्वलोए दो चेव य बायरविहाणा ॥ ९ ॥ सुहुमा य सव्वलोए परियावन्ना भवंति नायव्वा । दो चेव बायराणं पज्जत्तियरे अ नायव्वा ॥१०॥ परूवणादारं गयंति ॥ लक्खण-
 मियाणि दारं चिंधं हेऊ अ कारणं लिंगं । लक्खणमिइ जीवस्स उ आयाणाई इमं तं च ॥११॥ (भाष्यम्) आयाणे परिभोगे जोगुवओगे कसाय लेसा य । आणापाणू इंदिय बंधोदयनिज्जरा चेव ॥२२४॥ चित्तं
 चेयण सन्ना विन्नाणं धारणा य बुद्धी अ । ईहा मई वियक्का जीवस्स उ लक्खणा एए ॥ २२५ ॥ लक्खिज्जइत्ति नज्जइ पच्चक्खियरो व जेण जो अत्थो । तं तस्स लक्खणं खलु धूमण्हाइव्व अग्गिस्स ॥ १२ ॥
 अयगार कूर परसू अग्गि सुवण्णे अ खीर नर वासी । आहारो दिट्ठंता आयाणाईण जहसंखं ॥ १३ ॥ देहिंदियाइरित्तो आया खलु गज्झगाहगपओगा । संडासा अयपिंडो अययाराइव्व विन्नेओ ॥ १४ ॥ देहो
 मभोत्तिओ खलु भोजत्ता ओयणाइत्थालं व । अन्नप्पओगिता खलु जोगा परसुव्व करणत्ता ॥ १५ ॥ उवओगा नाभावो अग्गिव्व सलक्खणापरिच्चागा । सकसाया णाभावो पज्जयगमणा सुवण्णं व ॥ १६ ॥ लेसाओ
 णाभावो परिणमणमभावओ य खीरं व । उस्सासा णाभावो समसब्भावा खउव्व नरो ॥ १७ ॥ अक्खाणेयाणि परत्थगाणि वासाइवेह करणत्ता । गहवेयगनिज्जरओ कम्मस्सऽन्नो जहाऽऽहारो ॥ १८ ॥ चित्तं
 तिकालविसयं चेयण पच्चक्ख सन्नमणुसरणं । विण्णाणऽणेगभेयं कालमसंखेयरं धरणा ॥ १९ ॥ अत्थस्स ऊह बुद्धी ईहा चेट्ठत्थ अवंगमो उ मई । संभावणत्थ तक्का गुणपच्चक्खा घडोव्वऽत्थि ॥२०॥ जम्हा चित्ता-
 ईया जीवस्स गुणा हवंति पच्चक्खा । गुणपच्चक्खत्तणओ घडुव्व जीवो अओ अत्थि ॥२१॥ अत्थित्ति दारमहुणा जीवस्सइ अत्थि विज्जए(न्न चेयणो)नियमा । लोआययमयघायत्थमुच्चए तत्थिमो हेऊ ॥२२॥ जो
 चित्तेइ सरीरे नत्थि अहं स एव होइ जीवोत्ति । न हुं जीवमि असंते संसयउप्पायओ अन्नो ॥२३॥ जीवस्स एस धम्मो जा ईहा अत्थि नत्थि वा जीवो ? । खाणुमणुस्साणुगया जह ईहा देवदत्तस्स ॥२४॥ सिद्धं
 जीवस्स अत्थित्तं, सहादेवाणुमीयए । नासओ भुवि भावस्स, सहो हवइ केवलो ॥२५॥ अत्थित्ति निव्विगप्पो जीवो नियमाउ सहओ सिद्धी । कम्हा ? सुद्धपयत्ता घडखरसिंगाणुमाणाओ ॥२६॥ चोयग-सुद्ध-
 पयत्ता सिद्धी जइ एवं सुण्णसुद्धि अम्हंपि । तं न भवइ संतेणं जं सुन्नं सुन्नगेहं व ॥ २७ ॥ मिच्छा भवेउ सब्बत्था, जे केई पारलोइया । कत्ता चेवोपभोत्ता य, जइ जीवो न विज्जइ ॥ २८ ॥ पाणिदया तवनियमा
 बंभं दिक्खा य इंदियनिरोहो । सब्बं निरत्थयमेयं, जइ जीवो न विज्जइ ॥२९॥ लोइया वेइया चेव, तहा सामाइया विऊ । निच्चो जीवो पिहो देहा, इइ सब्बे ववत्थिया ॥ ३० ॥ लोए अच्छेज्जऽभेज्जो वेए सपुरिस-
 दद्धगसियालो । समएऽज्जऽहमासि गओ तिविहो दिव्वाइसंसारो ॥ ३१ ॥ अत्थि सरीरविहाया पइनिययागारयाइभावाओ । कुंभस्स जह कुलालो सो मुत्तो कम्मजोगाओ ॥ ३२ ॥ फरिसेण जहा वाऊ, गिज्झई
 कायसंसिओ । नाणाईहिं तहा जीवो, गिज्झई कायसंसिओ ॥३३॥ अणिंदियगुणं जीवं, दुन्नेयं मंसचक्खुणा । सिद्धा पासंति सब्बच्चू, नाणसिद्धा य साहुणो ॥३४॥ अत्तवयणं तु मत्थं दिट्ठा य तओ अइंदियाणंपि ।
 सिद्धी गहणाईणं तहेव जीवस्स विन्नेया ॥ ३५ ॥ अण्णत्तममुत्तत्तं निच्चत्तं चेव भण्णए समयं । कारणअविभागाईहेऊहिं इमाहिं गाहाहिं ॥ ३६ ॥ (भाष्यं) कारणऽविभाग कारणविणास बंधस्स पच्चयाभावा ।
 विरूद्धस्स य अत्थस्सापाउब्भावाविणासा य ॥२२६॥ अन्नत्ति दारमहुणा अन्नो देहा गिहाउ पुरिसोव्व । तज्जीवतस्सरीरियमयघायत्थं इमं भणियं ॥३७॥ देहिंदियाइरित्तो आया खलु तदुवल्लद्वअत्थाणं । तव्वि-
 मुनि दीपरत्तसागर

गमेऽवि सरणओ गेहगवक्खेहिं पुरिसोव्व ॥ ३८ ॥ न उ इंदियाइं उवलद्धिमंति विगएसु विसयसंभरणा । जह गेहगवक्खेहिं जो अणुसरिया स उवलद्धा ॥ ३९ ॥ संपयममुत्तदारं अइंदियत्ता अल्लेयभेयत्ता ।
 रूवाइविरहओ वा अणाइपरिणामभावाओ ॥ ४० ॥ छउमत्थाणुवलंभा तहेव सव्वन्नवयणओ चेव । लोयाइपसिद्धीओ जीवोऽमुत्तोत्ति नायव्वो ॥ ४१ ॥ णिच्चोत्ति दारमहुणा णिच्चो अविणासि सासओ जीवो ।
 भावत्ते सइ जम्माभावाउ नहं व विन्नेओ ॥ ४२ ॥ संसाराओ आलोयणाउ तह पच्चभिन्नभावाओ । खणभंगविघायत्थं भणिअं तेलोक्कदंसीहिं ॥ ४३ ॥ लोगे वेए समए निच्चो जीवो विभासओ अम्हं । इहरा संसाराइं
 सव्वंपि न जुजए तस्स ॥ ४४ ॥ कारणअविभागाओ कारणअविणासओ य जीवस्स । निच्चत्तं विन्नेयं आगासपडाणुमाणाओ ॥ ४५ ॥ हेउप्पभवो बंधो जम्माणंतरहंयस्स नो जुत्तो । तज्जोगविरहओ खलु चो-
 राइघडाणुमाणाओ ॥ ४६ ॥ (भाष्यम्) बंधस्स पच्चयाओ स बज्झई बंधपच्चया जीवो । एगंतखणिय तह निच्चवायघायत्थमिममुत्तं ॥ १ ॥ बंधस्स पच्चया खलु मिच्छत्तं अविरई कसाया उ । जेण पमाओ लेसा चो-
 राइघडाणुमाणाओ ॥ २ ॥ अत्थविभावा निच्चोऽणिच्चो जीवो खकुंभओवम्मा । सवियाराणुवलंभा अविणासी पुग्गलो णेओ ॥ ३ ॥ (प्र०) अविणासी खलु जीवो विगारऽणुवलंभओ जहाऽऽगासं । उवलब्भंति विगारा
 कुंभाइविणासिदघाणं ॥ ४ ॥ (भाष्यम्) निरामयाऽमयभावा बालकयाणुसरणादुवत्थाणा । सुत्ताईहिं अगहणा जाईसरणा थणभिलासा ॥ २२७ ॥ रोगस्सामयसन्ना बालकयं जं जुवाऽणुसंभरइ । जं कयमच्चंमि
 भवे तस्सेवऽन्नत्थुवत्थाणा ॥ ४८ ॥ णिच्चो अणिंदियत्ता खणिओ नवि होइ जाइसंभरणा । थणअभिलासा य तहा अमओ नउ मिम्मउव्व घडो ॥ ४९ ॥ (भाष्यम्) सव्वन्नवदिट्ठत्ता सकम्मफलभोयणा अमु-
 त्तत्ता । जीवस्स सिद्धमेवं निच्चत्तममुत्तमन्नत्तं ॥ २२८ ॥ कत्तत्ति दारमहुणा सकम्मफलभोइणो जओ जीवा । वाणियकिसीवला इव कविलमयनिसेहणं एयं ॥ ५० ॥ वावित्ति दारमहुणा देहवावी मओऽग्गि-
 उण्हं व । जीवा नउ सव्वगओ देहे लिंगोवलंभाओ ॥ ५१ ॥ अहुणा गुणित्ति दारं होइ गुणेहिं गुणित्ति विन्नेओ । ते भोगजोगउवओगमाइ रूवाइ व घडस्स ॥ ५२ ॥ उडुंगइत्ति अहुणा अगुरुलहुत्ता सभावउडुंगई ।
 दिट्ठंत लाउएणं एरंडफलाइएहिं च ॥ ५३ ॥ अमओ य होइ जीवो कारणविरहा जहेव आगासं । समयं च होअनिच्चं मिम्मयघडंतंतुमाईयं ॥ ५४ ॥ साफलदारमहुणा निच्चानिच्च परिणामिजीवम्मि । होइ तयं
 कम्माणं इहरेगसभावओऽजुत्तं ॥ ५५ ॥ जीवस्स उ परिमाणं वित्थरओ जाव लोगमेत्तं तु । ओगाहणा य सुहुमा तस्स पएसा असंखेज्जा ॥ ५६ ॥ पत्थेण व कुलएण व जह कोइ मिणेज्ज सव्वधन्नाइं । एवं मवि-
 ज्जमाणा हवंति लोगा अणंता उ ॥ ५७ ॥ (भाष्यम्) णामं ठवणसरीरे गई णिकायऽत्थिकाय दविए य । माउग पज्जव संगह भारे तह भावकाए य ॥ २२९ ॥ इत्थं पुण अहिगारो निकायकाएण होइ सुत्तंमि ।
 उच्चारिअत्थसदिसाण कित्तणं सेसगाणंपि ॥ २३० ॥ दव्वं सत्थग्गिविसं नेहंबिलखारलोणमाईयं । भावो उ दुप्पउत्तो वाया काओ अविरई अ ॥ २३१ ॥ किंची सकायसत्थं किंची परकाय तदुभयं किंची । एयं तु
 दव्वसत्थं भावे अस्संजमो सत्थं ॥ २३२ ॥ बीए जोणिच्चभूए जीवो वुक्कमइ सो य अन्नो वा । जोऽवि य मूले जीवो सोऽवि य पत्ते पढमयाए ॥ २३३ ॥ विद्धत्थाऽविद्धत्था जोणी जीवाण होइ नायवा । तत्थ अवि-
 द्धत्थाए वुक्कमई सो य अन्नो वा ॥ ५८ ॥ जो पुण मूले जीवो सो निव्वत्तेइ जा पढमपत्तं । कंदाइ जाव बीयं सेसं अन्ने पकुव्वंति ॥ ५९ ॥ सेसं सुत्तप्फासं काए काए अहक्कमं बूया । अज्झयणत्था पंच य पगर-
 णपयवंजणविसुद्धा ॥ ६० ॥ (भाष्यम्) सीयालं भंगसयं पच्चक्खाणंमि जस्स उवलद्धं । सो खलु पच्चक्खाणे कुसलो सेसा अकुसला उ ॥ १ ॥ (प्र०) जीवाजीवाभिगमो आयारो चेव धम्मपन्नत्ती । तत्तो चरित्त-
 धम्मो चरणे धम्मे अ एगट्ठा ॥ २३४ ॥ इइ छज्जीवणियाज्झयणं ४ ॥ मूलगुणा वक्खाया उत्तरगुणअवसरेण आयायं । पिंडज्झयणमियाणिं निक्खेवे नामनिप्फन्ने ॥ ६१ ॥ (भाष्यम्) ॥ पिंडो अ एसणा य दुपयं
 नामं तु तस्स नायव्वं । चउचउनिक्खेवेहिं परूवणा तस्स कायवा ॥ २३५ ॥ नामंठवणापिंडो दव्वे भावे अ होइ नायव्वो । गुडओयणाइ दव्वे भावे कोहाइया चउरो ॥ २३६ ॥ पिंडि संघाए जम्हा ते उइया संघया
 य संसारे । संघाययंति जीवं कम्मेणऽट्टपगारेण ॥ २३७ ॥ दव्वेसणा उ तिविहा सच्चित्ताचित्तमीसदघाणं । दुपयचउप्पयअपया नरगयकरिसावणदुमाणं ॥ २३८ ॥ भावेसणा उ दुविहा पसत्थ अपसत्थगा य नायवा ।
 नाणाईण पसत्था अपसत्था कोहमाईणं ॥ २३९ ॥ भावस्सुवगारित्ता एत्थं दव्वेसणाइ अहिगारो । तीइ पुण अत्थजुत्ती वत्तवा पिंडनिज्जुत्ती ॥ २४० ॥ पिण्डेसणा य सव्वा संखेवेणोयरइ नवसु कोडीसु । न हणेइ
 न पयइ न किणइ कारावणअणुमईहिं नव ॥ २४१ ॥ सा नवहा दुह कीरइ उग्गमकोडी विसोहिकोडी अ । छसु पढमा ओयरइ कीयतियम्मि विसोही उ ॥ २४२ ॥ कोडीकरणं दुविहं उग्गमकोडी विमोहिकोडी
 अ । उग्गमकोडी छक्कं विसोहिकोडी अणेगविहा ॥ ६२ ॥ (भाष्यम्) कम्मुदेसिअचरमतिग पूइयं मीस चरिमपाहुडिआ । अज्झोयर अविमोही विसोहिकोडी भवे सेसा ॥ २४३ ॥ नव चेवट्टारसगा सत्तावीसा
 तहेव चउपन्ना । नउई दो चेव सया सत्तरिया हुंति कोडीणं ॥ २४४ ॥ रागाई मिच्छाई रागाई समणधम्म नाणाई । नव नव सत्तावीसा नव नउईए य गुणगारा ॥ २४५ ॥ इइ पिंडेसणाज्झयणं ५ ॥ जो पुधिं
 उदिट्ठो आयारो सो अहीणमइरित्तो । सच्चेव य होइ कहा आयारकहाए महईए ॥ २४६ ॥ धम्मो बावीसविहो अगारधम्मोऽणगारधम्मो अ । पढमो अ बारसविहो दसहा पुण बीयओ होइ ॥ २४७ ॥ पंच य
 अणुवयाइं गुणवयाइं च होंति तिन्नेव । सिक्खावयाइं चउरो गिहिधम्मो बारसविहो अ ॥ २४८ ॥ खंती अ मद्दवऽज्जव मुत्ति तव संजमे अ बोद्धव्वे । सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥ २४९ ॥ धम्मो
 एसुवइट्ठो अत्थस्स चउव्विहो उ निक्खेवो । ओहेण छव्विहऽत्थो चउसट्ठिविहो विभागेणं ॥ २५० ॥ धन्नाणि रयण थावर दुपय चउप्पय तहेव कुविअं च । ओहेण छव्विहऽत्थो एसो धीरेहिं पन्नत्तो ॥ २५१ ॥
 चउवीसा चउवीसा तिग दुग दसहा अणेगविह एव । सव्वेसिंपि इमेसिं विभागमहयं पवक्खामि ॥ २५२ ॥ धन्नाइं चउवीसं जव १ गोहुम २ सालि ३ वीहि ४ सट्ठी अ ५ । कोहव ६ अणुया ७ कंगूट ८ रालग ९ तिल १०

मुग्ग ११ मासा १२ य ॥ २५३ ॥ अयसि १३ हरिमन्थ १४ तिउडग १५ निष्काव १६ सिलिंद १७ रायमासा १८ य । इक्खू १९ मसूर २० तुवरी २१ कुलत्थ २२ तह धन्नग २३ कलाया २४ ॥ २५४ ॥ रयणाणि
 चउव्वीसं सुवण्णतउतंबरययलोहाइं । सीसगहिरण्णपासाणवइरमणिमोत्तिअपवालं ॥ २५५ ॥ संखो तिणिसागुरुचंदणाणि वत्थामिलाणि कट्टाणि । तह चम्मदंतवाला गंधा दबोसहाइं च ॥ २५६ ॥ भूमी घरा य
 तरुण तिविहं पुण थावरं मुणेअबं । चक्कारबद्धमाणुस दुविहं पुण होइ दुपयं तु ॥ २५७ ॥ गावी महिसी उट्टा (ट्टा) अयएलगआसआसतरगा अ । घोडग गहह हत्थी चउप्पयं होइ दसहा उ ॥ २५८ ॥ नाणा-
 विहोवगरणं णेगविहं कुप्पलक्खणं होइ । एसो अत्थो भणिओ छबिह चउसट्टिभेओ उ ॥ २५९ ॥ कामो चउवीसविहो संपत्तो खलु तहा असंपत्तो । संपत्तो चउदसहा दसहा पुण होअसंपत्तो ॥ २६० ॥ तत्थ
 असंपत्तो अत्थ १ चिंता २ तह सद्ध ३ संसरणमेव ४ । विक्कवय ५ लज्जनासो ६ पमाय ७ उम्माय ८ तब्भावो ९ ॥ २६१ ॥ मरणं १० च होइ दसमो संपत्तंपिअ समासओ वोच्छं । दिट्ठीए संपाओ दिट्ठीसेवा य १ संभासो २
 ॥ २६२ ॥ हसिअ ३ ललिअ ४ उवगूहिअ ५ दंत ६ नहनिवाय ७ चुंबणं ८ होइ । आलिंगण ९ मायाणं १० कर ११ सेवण १२ संग १३ किड्ढा १४ अ ॥ २६३ ॥ धम्मो अत्थो कामो तिन्नेते पिंडिया पडिसवत्ता । जि-
 णवयणं उत्तिन्ना असवत्ता होंति नायव्वा ॥ २६४ ॥ जिणवयणंमि परिणए अवत्थविहिआणुठाणओ धम्मो । सच्छासयप्पयोगा अत्थो वीसंभओ कामो ॥ २६५ ॥ धम्मस्स फलं मोक्खो सासयमउलं सिवं
 अणाबाहं । तमभिप्पेया साहू तम्हा धम्मत्थकामत्ति ॥ २६६ ॥ परलोगु मुत्तिमग्गो नत्थि हु मोक्खोत्ति बिंति अविहिन्नू । सो अत्थि अवितहो जिणमयंमि पवरो न अन्नत्थ ॥ २६७ ॥ अट्टारस ठाणाइं आया-
 रकहाए जाइं भणियाइं । तेसिं अन्नतरागं सेवंतु न होइ सो समणो ॥ २६८ ॥ वयल्लकं कायल्लकं, अकप्पो गिहिभायणं । पलियं क निसेजा य, सिणाणं सोहवज्जणं ॥ २६९ ॥ इइ धम्मत्थकामज्झयणं ६ ॥ निक्खेवो
 अ (उ) चउक्को वक्के दवं तु भासदवाइं । भावे भासासहो तस्स य एगट्टिया इणमो ॥ २७० ॥ वक्कं वयणं च गिरा सरस्सई भारही अ गो वाणी । भासा पन्नवणी देसणी अ वयजोग जोगे अ ॥ २७१ ॥ दब्वे तिविहा
 गहणे अ निसिरणे तह भवे पराघाए । भावे दब्वे अ सुए चरित्तमाराहणी चेव ॥ २७२ ॥ आराहणी उ दब्वे सच्चा मोसा विराहणा होइ । सच्चा मोसा मीसा असच्चमोसा य पडिसेहा ॥ २७३ ॥ जणवय सम्मय
 ठवणा नामे रूवे पट्टुच्चसच्चे अ । ववहार भाव जोगे दसमे ओवम्मसच्चे अ ॥ २७४ ॥ कोहे माणे माया लोभे पेजे तहेव दोसे अ । हास भये अक्खाइय उवघाए निस्सिआ दसमा ॥ २७५ ॥ उप्पन्नविगयमीसग
 जीवमजीवे अ जीवअजीवे । तह ऽणंतमीसगा खलु परित्त अद्धा य अद्धा ॥ २७६ ॥ आमंतणि आणवणी जायणि तह पुच्छणी अ पन्नवणी । पन्नवणी भासा भासा इच्छाणुलोमा अ ॥ २७७ ॥ अण-
 भिग्गहिआ भासा भासा अ अभिग्गहंमि बोद्धवा । संसयकरणी भासा वायड अवायडा चेव ॥ २७८ ॥ सव्वावि अ सा दुविहा पज्जत्ता खलु तहा अपज्जत्ता । पढमा दो पज्जत्ता उवरिल्ला दो अपज्जत्ता ॥ २७९ ॥
 सुअधम्मे पुण तिविहा सच्चा मोसा असच्चमोसा अ । सम्मदिट्ठी उ सुओवउत्तु सो भासई सच्चं ॥ २८० ॥ सम्मदिट्ठी उ सुअंमि अणुवउत्तो अहेउगं चेव । जं भासइ सा मोसा मिच्छादिट्ठीवि अ तहेव ॥ २८१ ॥
 हवइ उ असच्चमोसा सुअंमि उवरिल्लए तिनाणंमि । जं उवउत्तो भासइ एत्तो वोच्छं चरित्तम्मि ॥ २८२ ॥ पढमबिइआ चरित्ते भासा दो चेव होंति नायव्वा । सचरित्तस्स उ भासा सच्चा मोसा उ इयरस्स
 ॥ २८३ ॥ णामंठवणासुद्धी दब्वसुद्धी अ भावसुद्धी अ । एएसिं पत्तेअं परूवणा होइ कायव्वा ॥ २८४ ॥ तिविहा उ दब्वसुद्धी तदव्वादेसओ पहाणे अ । तदव्वगमाएसो अणण्णमीसा हवइ सुद्धी ॥ २८५ ॥ वण्णर-
 संगंधफासे समणुण्णा सा पहाणओ सुद्धी । तत्थ उ सुक्किल मट्टुरा उ समया चेव उक्कोसा ॥ २८६ ॥ एमेव भावसुद्धी तब्भावाएसओ पहाणे अ । तब्भावगमाएसो अणण्णमीसा हवइ सुद्धी ॥ २८७ ॥ दंसणना-
 णचरित्ते तवोविसुद्धी पहाणमाएसो । जम्हा उ विसुद्धमलो तेण विसुद्धो हवइ सुद्धो ॥ २८८ ॥ जं वक्कं वयमाणस्स संजमो सुज्झई न पुण हिंसा । न य अत्तकलुसभावो तेण इहं वक्कसुद्धित्ति ॥ २८९ ॥ वयण-
 विभत्तीकुसलस्स संजमंमी समुज्जुयमइस्स । दुब्भासिएण हुज्जा हु विराहणा तत्थ जइअबं ॥ २९० ॥ वयणविभत्तिअकुसलो वओगयं बहुविहं अयाणंतो । जइवि न भासइ किंची न चेव वयगुत्तयं पत्तो ॥ २९१ ॥
 वयणविभत्तीकुसलो वओगयं बहुविहं वियाणंतो । दिवसंपि भासमाणो तहावि वयगुत्तयं पत्तो ॥ २९२ ॥ पुबं बुद्धीइ पेहित्ता, पच्छा वयमुयाहरे । अचक्खुओ व नेतारं, बुद्धिमन्नेउ ते गिरा ॥ २९३ ॥ इइ सवक्क-
 सुद्धीअज्झयणं ७ ॥ जो पुबिं उदिट्ठो आयारो सो अहीणमइरित्तो । दुविहो अ होइ पणिही दब्वे भावे अ नायव्वो ॥ २९४ ॥ दव्वे निहाणमाई मायपउत्ताणि चेव दव्व्वाणि । भाविंदिअनोइंदिअ दुविहो उ पसत्थ
 अपसत्थो ॥ २९५ ॥ सहेसु अ रूवेसु अ गंधेसु रसेसु तह य फासेसु । नवि रज्जइ नवि दुस्सइ एसा खलु इंदिअपणिही ॥ २९६ ॥ सोइंदिअरस्सीहि उ मुक्काहिं सद्धमुच्छिओ जीवो । आइअइ अणाउत्तो सद्दगुण-
 समुट्टिए दोसे ॥ २९७ ॥ जह एसो सहेसुं एसेव कमो उ सेसएहिंपि । चउहिंपि इंदिएहिं रूवे गंधे रसे फासे ॥ २९८ ॥ जस्स खलु दुप्पणिहिआणि इंदिआइं तवं चरंतस्स । सो हीरइ असहीणेहिं सारही वा तुरंगंहिं
 ॥ २९९ ॥ कोहं माणं मायं लोहं च महब्भयाणि चत्तारि । जो रंभइ सुद्धप्पा एसो नोइंदिअपणिही ॥ ३०० ॥ जस्सविअ दुप्पणिहिआ होंति कसाया तवं चरंतस्स । सो बालतवस्सीविव गयणहाणपरिस्ममं कृणइ
 ॥ ३०१ ॥ सामन्नमणुचरंतस्स कसाया जस्स उक्कडा होंति । मन्नामि उच्छुफुल्लं व निष्फलं तस्स सामन्नं ॥ ३०२ ॥ एसो दुविहो पणिही सुद्धो जइ दोसु तस्स तेसिं च । एत्तो पमत्थमपमत्थ लक्खणमज्झत्थ-
 निष्फन्नं ॥ ३०३ ॥ मायागारवसहिओ इंदियनोइंदिएहिं अपसत्थो । धम्मत्था अ पसत्थो इंदियनोइंदियपणिही ॥ ३०४ ॥ अट्टविहं कम्मरयं बंधइ अपसत्थपणिहिमाउत्तो । तं चेव खवेइ पुणो पसत्थपणिही-
 समाउत्तो ॥ ३०५ ॥ दंसणनाणचरित्ताणि संजमो तस्स साहणट्टाए । पणिही पउंजियव्वो अणायणाइं च वजाइं ॥ ३०६ ॥ दुप्पणिहिअजोगी पुण लंछिज्जइ संजमं अयाणंतो । वीसत्थनिसट्टंगोव्व कंटइट्टे जह
 १३७० श्रीदशवैकालिकनिर्युक्ति

पडंतो ॥ ३०७ ॥ सुप्पणिहिअजोगी पुण न लिप्पई पुव्वभणिअदोसेहिं । निदहइ अ कम्माइं सुकतणाइं जहा अग्गी ॥ ३०८ ॥ तम्हा उ अप्पसत्थं पणिहाणं उज्झिऊण समणेणं । पणिहाणंमि पसत्थे भणिओ
 आयारपणिहित्ति ॥ ३०९ ॥ इइ आयारपणिहीअज्झयणं ८ ॥ विणयस्स समाहीए निक्खेवो होइ दोण्हवि चउक्को । दव्वविणयंमि तिणिसो सुवण्णमिच्चेवमाईणि ॥ ३१० ॥ लोगोवयारविणओ अत्थनिमित्तं
 च कामहेउं च । भयविणय मुक्खविणओ विणओ खलु पंचहा होइ ॥ ३११ ॥ अब्भुट्टाणं अंजलि आसणदाणं अतिहिपूआ य । लोगोवयारविणओ देवयपूआ य विहवेणं ॥ ३१२ ॥ अब्भासवित्तिछंदाणुवत्तणं
 देसकालदाणं च । अब्भुट्टाणं अंजलि आसणदाणं च अत्थकए ॥ ३१३ ॥ एमेव कामविणओ भए अ नेअव्वमाणुपुव्वीए । मोक्खंमिऽवि पंचविहो परूवणा तस्सिमा होइ ॥ ३१४ ॥ दंसणनाणचरित्ते तवे अ तह
 ओवयारिए चेव । एसो अ मोक्खविणओ पंचविहो होइ नायव्वो ॥ ३१५ ॥ दव्व्वाण सब्भवा उवइट्टा जे जहा जिणवरेहिं । ते तह सहइइ नरो दंसणविणओ हवइ तम्हा ॥ ३१६ ॥ नाणं सिक्खइ नाणं गुणेइ
 नाणेण कुणइ किच्चाइं । नाणी नवं न बंधइ नाणविणीओ हवइ तम्हा ॥ ३१७ ॥ अट्टविहं कम्मचयं जम्हा रिक्तं करेइ जयमाणो । नवमन्नं च न बंधइ चरित्तविणओ हवइ तम्हा ॥ ३१८ ॥ अवणेइ तवेण तमं
 उवणेइ अ सग्गमोक्खमप्पाणं । तवविणयनिच्छियमई तवोविणीओ हवइ तम्हा ॥ ३१९ ॥ अह ओवयारिओ पुण दुविहो विणओ समासओ होइ । पडिरूवजोगजुंजण तह य अणासायणाविणओ ॥ ३२० ॥
 पडिरूवो खलु विणओ काइअजोए य वाइ माणसिओ । अट्ट चउव्विह दुविहो परूवणा तस्सिमा होइ ॥ ३२१ ॥ अब्भुट्टाणं अंजलि आसणदाणं अभिग्गह किई अ । सुस्सुसणमणुगच्छण संसाहण काय अट्ट-
 विहो ॥ ३२२ ॥ हिअमिअअफरुसवाई अणुवीईभासि वाइओ विणओ । अकुसलचित्तनिरोहो कुसलमणउदीरणा चेव ॥ ३२३ ॥ पडिरूवो खलु विणओ पराणुअत्तिमइओ मुणेअव्वो । अप्पडिरूवो विणओ नायव्वो
 केवलीणं तु ॥ ३२४ ॥ एसो भे परिकहिओ विणओ पडिरूवलक्खणो तिविहो । बावन्नविहिविहाणं बेत्ति अणासायणाविणयं ॥ ३२५ ॥ तित्थगर सिद्ध कुल गण संघ किया धम्म नाण नाणीणं । आयरिअ थेर
 ओज्झा गणीणं तेरस पयाणि ॥ ३२६ ॥ अणसायणा य भत्ती बहुमाणो तहय वन्नसंजलणा । तित्थगराई तेरस चउग्गुणा होंति बावन्ना ॥ ३२७ ॥ दव्वं जेण व दव्वेण समाही आहियं च जं दव्वं । भावसमाहि
 चउव्विह दंसणनाणे तवचरित्ते ॥ ३२८ ॥ इइ विणयसमाहीअज्झयणं ९ ॥ नामंठवणसयारो दव्वे भावे अ होइ नायव्वो । दव्वे पसंसमाई भावे जीवो तदुवउत्तो ॥ ३२९ ॥ निद्वेसपसंसाए अत्थीभावे अ होइ उ
 सगारो । निद्वेसपसंसाए अहिगारो इत्थ अज्झयणे ॥ ३३० ॥ जे भावा दसवेआलिअम्मि करणिज्ज वण्णिअ जिणेहिं । तेसिं समावणंमिति (मी) जो भिक्खू भन्नइ स भिक्खू ॥ ३३१ ॥ चरगमरुगाइआणं भिक्खु-
 जीवीण काउणमपोहं । अज्झयणगुणनिउत्तो होइ पसंसाइ उ सभिक्खू ॥ ३३२ ॥ भिक्खुस्स य निक्खेवो निरुत्त एगट्टिआणि लिंगाणि । अगुणट्टिओ न भिक्खू अवयवा पंच दाराइं ॥ ३३३ ॥ णामंठवणा-
 भिक्खू दव्वभिक्खू अ भावभिक्खू अ । दव्वम्मि आगमाई अन्नोऽवि अ पज्जवो इणमो ॥ ३३४ ॥ भेअओ भेअणं चेव, भिंदिअव्वं तहेव य । एएसिं तिण्हंपिअ पत्तेयपरूवणं वोच्छं ॥ ३३५ ॥ जह दारुकम्मगारो
 भेअणभित्तवसंजुओ भिक्खू । अन्नेऽवि दव्वभिक्खू जे जायणगा अविरया अ ॥ ३३६ ॥ गिहिणोऽवि सयारंभग उज्जुप्पन्नं जणं विमग्गंता । जीवणिअ दीणकिविणा ते विज्जा दव्वभिक्खुत्ति ॥ ३३७ ॥ मिच्छदिट्ठी
 तसथावरण पुढवाइविंदिआईणं । निच्चं वहकरणरया अबंभयारी अ संचइआ ॥ ३३८ ॥ दुपयचउप्पयधणधन्नकुवियतिअतिअपरिग्गहे निरया । सचित्तभोइ पयमाणगा अ उद्विट्ठभोई अ ॥ ३३९ ॥ करणतिए
 जोअतिए सावज्जे आयहेउपरउभए । अट्टाणट्टपवत्ते ते विज्जा दव्वभिक्खुत्ति ॥ ३४० ॥ इत्थीपरिग्गहाओ आणादाणाइभावसंगाओ । सुद्धतवाभावाओ कुतित्थिआऽबंभचारित्ति ॥ ३४१ ॥ आगमतो उवउत्तो
 तग्गुणसंवेअओ अ (उ) भावंमि । तस्स निरुत्तं भेअगभेअणभेत्तव्वएण तिहा ॥ ३४२ ॥ भेत्ताऽऽगमोवउत्तो दुविहतवो भेअणं च भेत्तव्वं । अट्टविहं कम्मखुहं तेण निरुत्तं सभिक्खुत्ति ॥ ३४३ ॥ भिंदंतो अ जह
 खुहं भिक्खू जयमाणओ जई होइ । संजमचरओ चरओ भवं खिवंतो भवंतो उ ॥ ३४४ ॥ जं भिक्खुमत्तवित्ती तेण व भिक्खू खवेइ जं व अणं । तवसंजमे तवस्सित्ति वावि अन्नोऽवि पज्जाओ ॥ ३४५ ॥ तिच्चे
 ताई दविए वई अ खंते अ दंत विरए अ । मुणि तावस पन्नवगुजु भिक्खू बुद्धे जइ विऊ अ ॥ ३४६ ॥ पव्वइए अणगारे पासंडी चरग बंभणे चेव । परिवायगे अ समणे निग्गंथे संजए मुत्ते ॥ ३४७ ॥ साहू लूहे
 अ तहा तीरट्ठी होइ चेव नायव्वो । नामाणि एवमाईणि होंति तवसंजमरयाणं ॥ ३४८ ॥ संवेगो निव्वेओ विसयविवेगो सुसीलसंसग्गो । आराहणा तवो नाणदंसणचरित्तविणओ अ ॥ ३४९ ॥ खंती अ महवऽज्जव
 विमुत्तया तह अदीणय तित्तिक्खा । आवस्सगपरिसुद्धी अ होंति भिक्खुस्स लिंगाइं ॥ ३५० ॥ अज्झयणगुणी भिक्खू न सेस इइ णो पइन्न को हेऊ ? । अगुणत्ता इइ हेऊ को दिट्ठंतो ? सुवण्णमिव ॥ ३५१ ॥
 विसघाइ रसायण मंगलत्थ विणिए पयाहिणावत्ते । गुरुए अडज्झऽकुत्थे अट्ट सुवण्णे गुणा भणिआ ॥ ३५२ ॥ चउकारणपरिसुद्धं कसत्थेअणतावतालणाए अ । जं तं विसघाइरसायणाइगुणसंजुअं होइ ॥ ३५३ ॥
 तं कसिणगुणोवेअं होइ सुवण्णं न सेसयं जुत्ती । नहि नामरूवमेत्तेण एवमगुणो हवइ भिक्खू ॥ ३५४ ॥ जुत्तीसुवण्णं पुण सुवण्णवण्णं तु जइवि कीरिज्जा । न हु होइ तं सुवण्णं सेसेहिं गुणेहिंऽसंतेहिं ॥ ३५५ ॥
 जे अज्झयणे भणिआ भिक्खुगुणा तेहिं होइ सो भिक्खू । वण्णेण जच्चसुवण्णं व संते गुणनिहिंमि ॥ ३५६ ॥ जो भिक्खू गुणरहिओ भिक्खं गिण्हइ न होइ सो भिक्खू । वण्णेण जुत्तिसुवण्णं व असई गुणनि-
 हिम्मि ॥ ३५७ ॥ उद्विट्ठकयं भुंजइ छक्कायपमंइओ घरं कुणइ । पच्चक्खं च जलगए जो पियइ कह नु सो भिक्खू ? ॥ ३५८ ॥ तम्हा जे अज्झयणे भिक्खुगुणा तेहिं होइ सो भिक्खू । तेहि अ सउत्तरगुणेहि
 होइ सो भाविअतरो उ ॥ ३५९ ॥ इइ सभिक्खूअज्झयणं १० ॥ दव्वे खेत्ते काले भावम्मि अ चूलिआय निक्खेवो । तं पुण उत्तरतंतं सुअगहिअत्थं तु संगहणी ॥ ३६० ॥ दव्वे सच्चित्ताई कुक्कुडचूडामणीमऊ-
 १३७१ श्रीदशवैकालिक निर्युक्ति

राई । खेत्तंमि लोगनिकुड मंदरचूडा अ कूडाई ॥३६१॥ अइरित्त अहिगमासा अहिगा संवच्छरा अ कालंमि । भावे खओवसमिए इमा उ चूडा मुणेअव्वा ॥३६२॥ दव्वे दुहा उ कम्मे नोकम्मरई अ सहदव्वाई ।
 भावरई तस्सेव उ उदए एमेव अरईवि ॥ ३६३ ॥ वक्कं तु पुव्वभणिअं धम्मे रइकारगाणि वक्काणि । जेणमिमीए तेणं रइवक्कंसा हवइ चूडा ॥ ३६४ ॥ जह नाम आउरस्सिह सीवणत्तेज्जेसु कीरमाणेसु । जंतण-
 मपत्थकुच्छाऽऽमदोसविरई हिअकरी उ ॥ ३६५ ॥ अट्टविहकम्मरोगाउरस्स जीअस्स तह तिगिच्छाए । धम्मे रई अधम्मे अरई गुणकारिणी होइ ॥ ३६६ ॥ सज्झायसंजमतवे वेयावच्चे अ झाणजंगे अ । जो
 रमइ नो रमइ अस्संजमम्मि सो वच्चई सिद्धिं ॥३६७॥ तम्हा धम्मे रइकारगाणि अरइकारगाणि उ (य) अहम्मे । ठाणाणि ताणि जाणे जाइं भणिआइं अज्झयणे ॥ ३६८ ॥ चू० १ ॥ अहिगारो पुव्वुत्तो चउ-
 विहो विइअचूलिअज्झयणे । सेसाणं दाराणं अहक्कमं फासणा होइ ॥ ६३ ॥ (भाष्यम्) दव्वे सरीर भविओ भावेण य संजओ इहं तस्स । उग्गहिआ पग्गहिआ विहारचरिआ मुणेअव्वा ॥ ३६९ ॥ अणिएअं
 पइरिक्कं अण्णायं सामुआणिअं उंछं । अप्पोवही अकलहो विहारचरिया इसिपसत्था ॥ ३७० ॥ छहिं मासेहिं अहीअं अज्झयणमिणं तु अज्जमणगेणं । छम्मासा परिआओ अह कालगओ समाहीए ॥ ३७१ ॥
 आणंदअंसुपायं कासी सिज्जंभवा तहिं थेरा । जसभइस्स य पुच्छा कहणा अ विआलणा संघे । ३७२ ॥ इति दशवैकालिकनिर्युक्तिः श्रीभद्रबाहुस्वामिभिः कृता समाप्ता ॥ श्रीसिद्धक्षेत्रीयश्रीवर्धमानजैनागममंदिर
 मण्डपानामियमादावत्कारिता शोधिता च तपोगच्छीयाचार्यानन्दसागरेण ॥ श्रीवीरस्य संवत् २४६७ आषाढकृष्णैकादश्यां शनिवासरे ।

मुनि दीपरत्तसागर